अभिलाषा लस्कर
छात्रा
हिंदी विभाग
संदिकै बालिका महाविद्यालय, गुवाहाटी,
असम

तीर युक्त

उम्माद वास्तव की श्रृंगार में
स्वप्न वासना के तृष्णा छीनकर
प्रकृति के हृदय में,
सूर्य के दीपक में
मैथुन क्रियारत वह युगल पक्षी
मन में उल्लास, प्रियतम के स्पर्श
हृदय में प्रीति कामना
वृक्ष के शाखाओं और पत्तियां भी
तल्लीन
पक्षी की क्रियारत में..
सहायता किया है, इस मिलन को
पर? निर्दय जीव श्रेष्ठ
मानव के हाथों
तीर युक्त हो के रह गए
इतिहास के पृष्ठ में ।।

स्पीति में बारिश

हिमवाह की मधुर झंकार में
बादल भी हो गए पुलकित,
तुषार रूपी फूल भी
हो गई झंकृत ।
मार्मिक जीवन से इस
दृश्य की क्या तुलना,
निर्वस्त्र वृक्ष को भी
धकने जो आ गया ।।
खेत खलिहानों की हंसी
किसानों को आनंद,
अनुभव करो तुम भी
जब वर्ष में एक दिन होगा स्वागत बारिश की ।
स्पीति में बारिश!
जब हमने सुना,
लोगों में नवयोवन का सा
श्रृंगार गूंज उठा
हो गए हम भी आनंद विभोर
स्पीति की इस अनुपम दृश्य को निहार ।